इंसान से मुताल्लिक़ इस्लाम की सोच

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

इस्लाम ने दुनिया को इंसान का जो मेयार पेश किया है वह सूरए बक़रा आयत-30 में अल्लाह के उस एलान से पूरी तरह ज़ाहिर है जिसका तर्जुमा ये हैः "वह वक़्त याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं ज़मीन में अपना नायब बनाना चाहता हूँ" इसका मतलब यही हुआ कि ज़मीन में अल्लाह के नायब होने की हक़दार पूरी काएनात में सिर्फ़ वही मख़लूक़ मानी गई जो सही माने में इंसान कही जा सकती है और इस तरह इंसान को सारी मख़लूक़ पर बड़ाई दी गई। फ़रिश्तों को हुक्म दिया गया कि मुकम्मल इंसान यानी आदम अलैहिस्सलाम के सामने अल्लाह के सज्दे के लिए झुक जाएं। ये इस बात की खुली हुई दलील है कि मुकम्मल इंसान का दर्जा फ़रिश्तों से भी ऊँचा होता है। दुनिया इंसान के असली मक़ाम और दर्जे से बेख़बर थी। काएनात की सबसे अहम, इंसान का सर बेजान पत्थरों और मामूली जानवरों और कीड़ों-मकोड़ों के आगे झुका हुआ था। उसे ख़बर न थी कि अल्लाह ने ये सारी काएनात खुद उसी की ख़िदमत के लिए बनाई है?

न तू ज़मीं के लिए है न आसामाँ के लिए
जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए

इस्लाम ही ने उसे बेहोशी से जगाया और जेहालत की उस नींद से जगाया और उसे उसके असली दर्जे और मरतबे की ख़बर दी। क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों में तर्जुमाः- "और हम ने आदम की औलाद को इज़्ज़त अता की है और हम ही ने उसे ख़ुश्की और दरिया में आने जाने की आसानिया दी हैं और हम ने उसको बेहतरीन चीज़ों का रिज़्क़ अता किया और हम ही ने उसे अपनी बहुत सी मख़लूक़ात पर बड़ी फ़ज़ीलत दी है।

अल्लाह के इस फ़रमान से इस बात का साफ़ तौर से पता चलता है कि काएनात के समाज में इंसान को कितनी बड़ाई और बरतरी और कितनी फ़ज़ीलत और ऊँचाई हासिल है जो किसी और को हासिल नहीं। इसके साथ ही क़ुरआने हकीम में ज़मीन और आसमान की बहुत सी ख़ास चीज़ों का नाम लेकर बताया गया है कि अल्लाह ने इन सब चीज़ों को इंसान ही की ख़िदमत के लिए पैदा किया है और उसके लिए उन्हें लगा दिया यानी उनकी बात मानने वाला बना दिया। जैसे सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, पेड, जानवर, दरिया, कश्तियाँ फिर ये भी फ़रमा दिया कि जो कुछ भी ज़मीन में पाया जाता है वह सब का सब इन्सान के लिए मुसख़्ख़र कर दिया गया है और इस से भी बढ़कर सूरए लुक़मान आयत-20 में यहाँ तक बता दिया गयाः तर्जुमाः- "क्या तुम लोग ये नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे ही काम में लगा रखा है उन सब चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी सारी नेमतें पूरी कर दी हैं।

कोई और नहीं ये सिर्फ़ इस्लाम ही है जिसने दुनिया को इंसान के सही तसव्वुर, असली मरतबे और हक़ीक़ी मक़ाम व मंज़िल से आगाह किया और उसमें ये हौसला और जुरअत पैदा की कि वह काएनात की बड़ी और छोटी चीज़ों को सजदा करने के बजाए उन पर हुकूमत करे और उनसे अपनी जाएज़ ज़रूरतों को पूरा करे और साथ ही उनकी पैदाईश के छुपे हुए भेद को मालूम करे। वह ज़मीन के जिगर को चीर डाले, पहाड़ों

की चट्टानों को फाड़ डाले, हवाओं के चप्पे-चप्पे पर उड़े, समुन्द्रों की तह में उतर जाए और सैय्यारों पर पहुँच कर उनके अन्दर अल्लाह की निशानियों को अपनी आँखों से देख ले। ग़रज़ इंसान काएनात की किसी चीज़ की भी गुलामी के लिए नहीं पैदा किया गया बल्कि उसके पैदाईश में बलन्दी, बरतरी और सरदारी रखी गई है। उसको ज़मीन व आसमान पर भरपूर हुकूमत मिली है, उसे ताक़त व कुव्वत के न ख़त्म होने वाले ख़ज़ाने दिये गए हैं और अल्लाह की तरफ से उसको रिज़्क़ के ऐसे ज़ख़ीरे दिये गए हैं जिनमें उसकी ज़िंदगी के बाक़ी रहने और खुशहाली के राज़ छुपे हुए हैं। ये रिज़्क़ सिर्फ़ वही नहीं है जिसे खा लिया जाए बल्कि इस से मुराद हर वह ज़रूरत है जिस पर इंसान की तरक़्क़ी और ज़िन्दगी टिकी हुई है। यह वह रिज़्क़ है जो उस ''उड़ने वाले परिन्दे'' की उड़ान को कम नहीं करता बल्कि उसके लिए काएनात की बड़ाईयों को लगा देता है। काएनात की सारी ऊँचाईयाँ इंसान को इसी रिज़्क़ से मिलती हैं जो अल्लाह ने उसके लिए तैय किया है जिसे छोड़ना मौत है और जिसका हासिल कर लेना हमेशा की ज़िन्दगी है-

ऐ ताएरे लाहूती उस रिज़्क़ से मौत अच्छी
जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़ में कोताही

अल्लाह ने इंसान ही की पैदाईश पर कुरआने हकीम में अपने बेहतरीन ख़ालिक़ होने का इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र फ़रमाया है- तर्जुमाः- ''अल्लाह की हस्ती बड़ी बरकत वाली है जो सारे पैदा करने वालों से बेहतर है'' फिर सूरए वत्तीन में कामिल इंसान की पैदाईश को ही ''अहसनि तक़वीम'' यानी बेहतरीन अंदाज़ की पैदाईश का ख़िताब अता हुआ है। इस तरह इस्लाम ने कामिल इंसान का जो ख़याल पेश किया है वह ये है कि काएनात के पूरे समाज में उस से बेहतर कोई नहीं, वह काएनात का ख़ादिम नहीं बल्कि काएनात खुद उसकी ख़िदमत करने वाली है, वह उसका हाकिम है, उसका सरदार है और ज़मीन में अल्लाह का नाएब है, लेकिन इसी के साथ इस्लाम ने ये भी बता दिया है कि इंसान को उसकी असली जगह सिर्फ़ उसी वक़्त मिल सकती है जब वह अल्लाह के दिये हुए ज़रियों और ताक़तों को सही तरीक़े पर इस्तेमाल भी करे और अपने दर्जे और मक़ाम को हासिल करने की कोशिश भी करे। उसके पास ज़रिये हैं, कुव्वत व ताक़त है तो उसके चारो तरफ़ एक ज़बरदस्त तूफ़ान भी है मगर सही माने में इंसान वही है जो मुश्किलों को कुचल कर अपनी मंज़िल का रास्ता तलाश कर ले और उनमें से कोई चीज़ भी उसके लिए रुकावट न बन सके। सूरए बलद आयत-4 में इसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है ये फ़रमा कर, तर्जुमाः- हम ने इंसान को बड़ी मशक़्क़त के लिए पैदा किया है और साथ ही सूरए अन्नज्म आयत 39 में ये भी फ़रमा दिया गया, तुर्जमाः- इंसान को सिर्फ़ वही मिलेगा जिसकी वह मेहनत व कोशिश करेगा। ग़रज़ इस्लाम ने इंसान की अज़मत व बलन्दी बताने के साथ ही ये बात भी बता दी है कि उसे ये बलन्दी सिर्फ़ उसी वक़्त मिल सकती है जब वह कोशिश और मेहनत करे, हाथ पर हाथ धरे बैठा न रहे बल्कि उन ताक़तों और सलाहियतों और रास्तों को काम में लाए जो अल्लाह ने उसे अता किये हैं।

इस्लाम की इस्तेलाह में हक़ीक़ी इंसान असली मोमिन होता है और हक़ीक़ी मोमिन इंसान होता है। असली मोमिन या हक़ीक़ी इंसान कभी कोशिश से ध्यान नहीं हटाता और कभी उसको मुसीबतों और मुश्किलों के तूफ़ान मायूस नहीं बनाते। वह अपने अमल से अपनी तक़दीर बनाता है और अपनी कोशिश से अपनी क़िस्मत संवारता है वह इरादे और मज़बूती का मुजस्समा हुआ करता है। आंहज़रत अपने अस्हाब से फ़रमाया करते थे ''तुम से पहले जो लोग गुज़र गए हैं उन्हें आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिया जाता था, उनके बदन पर लोहे की कंघियाँ चलाई जाती थीं जिसकी वजह से उनकी खाल उनके गोश्त से अलग हो जाती थी मगर ये कड़ी आज़माइशें भी उन्हें दीने हक़ से जुदा न कर सकीं।''

यही सब्र यही इरादा और मज़बूती और यही कोशिश और अमल दूसरे लफ़्ज़ों में ईमान है जिसके बग़ैर बलन्दी नहीं मिल सकती और इसी की तरफ़ कुरआने हकीम ने ये कहकर इशारा किया है, तर्जुमाः- अगर तुम में सच्चा ईमान है तो तुम ही सबसे बलन्द और सब पर ग़ालिब रहोगे। **(शेष..... पेज 14 पर)**

अपनी ज़बान से बयान करता है यहाँ के हालात को और ख़वातीन की बदहाली को। अफ़सोस की बात ये है कि औरतों का इस्तेहसाल किसी ख़ास फ़िरक़े तक घिरा हुआ नहीं है बल्कि वह क़ौमें भी इसमें शामिल हो गई हैं जिनके मज़हब ने माँ के पैर के नीचे जन्नत दिखाई है। वह लोग भी औरतों को उनके हुक़ूक़ से महरूम करने लगे हैं जिनको मालूम है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा[अ०] अपने ज़माने की अरब की सबसे मशहूर ताजिरा औरत थीं। इस क़ौम का एक गिरोह भी औरतों के इस्तेहसाल में लगा है जिसको मालूम है कि अल्लाह ने मर्द और औरत को बराबर के हुक़ूक़ दिये हैं।

अल्लाह को एक मानने वालों पर हिन्दुस्तानी समाज का रंग ऐसा चढ़ा है कि अगर किसी के घर में चार लड़कियाँ हैं तो वह भी अपने आपको बदक़िस्मत समझ कर हर वक़्त तक़दीर को कोसता रहता है। अल्लाह ने औरतों को जो हुक़ूक़ दिये हैं उनको समाजी बंदिशों के नाम पर हड़पना और औरतों को को वह आज़ादियाँ जो इस्लाम ने अता की हैं उनको रस्मों के नाम पर ख़त्म करना एक आम सी बात हो गई है। हमारे सारे समाज में हिन्दुस्तानी रस्में इस तरह रच-बस गई हैं कि कभी-कभी हम ये समझने लगते हैं कि ये कोई रस्म नहीं बल्कि इस्लाम का कोई हुक्म है। ख़ास तौर पर शादी-ब्याह की रस्मों में ऐसी-ऐसी चीज़ें देखने को मिलती हैं कि हैरत होती है। अगर नाक में नथ नहीं हो तो निकाह नहीं होगा, सुर्ख़ जोड़ा अगर सुसराल से नहीं आया तो लड़की दुलहन नहीं बनेगी, बड़ा सा सेहरा नहीं होगा तो नौशा मियाँ अपने घर से नहीं निकलेंगे। माँ-बाप को लगेगा ही नहीं कि घर में शादी हो रही है और फिर लड़की की रुख़सती के वक़्त जब तक सारा गाँव आँसू नहीं बहाएगा लड़की के घर वालों को लगेगा ही नहीं कि लड़की चली गई। क्या शादियों में इस तरह रो कर हम भी उसी अक़ीदे का इज़हार नहीं करते कि हम ने लड़की को दान कर दिया और अब इस पर हमारा कोई हक़ नहीं वह ग़ैर की हो गई अब उस पर माँ-बाप को कोई हक़ नहीं? क्या इस्लाम ने ऐसा कोई हुक्म दिया है कि जिस से ये तै हो सके कि शादी के बाद लड़की पर माँ-बाप का कोई हक़ नहीं रहता?

औरतों के मामले में इस्लामी क़ानूनों की धज्जियाँ उड़ाए जाने की उस वक़्त तो हद हो गई जब हरियाना की एक मुस्लिम पंचायत ने एक ही गोत्र में शादी किये जाने की शदीद मुख़ालिफ़त की। हालांकि रसूले अकरम[स०] ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की शादी अपने सब से क़रीबी रिश्तेदार हज़रत अली[अ०] से की, लेकिन हमारे हिन्दुस्तानी समाज का रंग एक मुस्लिम पंचायत पर ऐसा ग़ालिब हुआ कि उन्होंने गोत्र जैसे ग़ैर इंसानी फ़लसफ़े को मान लिया। ख़याल रहे कि इसी गोत्र के नाम पर आज हरियाना, राजस्थान और पंजाब में आबाद लड़कियों की ज़िंदगी अजीरन हो गई है और कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि जब दोचार लड़कियाँ किसी गाँव में ख़ामोशी से मार न दी जाती हों।

हम जिस समाज में रह रहे हैं उसमें औरत के ख़िलाफ़ जुर्म करने की एक ख़ास सोच मौजूद है और इस सोच को बदलने के लिए किसी एक दिन को औरतों के नाम करके कोई फ़ायदा होने वाला नहीं है। हमको हर दिन औरतों के जाएज़ हुक़ूक़ उन तक पहुँचाने के लिए काम करना होगा। ख़ास तौर पर मुस्लिम उलमा को इस मामले में एक भरपूर मुहिम चलाना होगी जिसके तहत औरत को वह दर्जा मिल सके जो इस्लाम ने उसको दिया है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 9 मार्च 2011[ई०])

शेष इंसान से मुताल्लिक़..........

सरवरे काएनात[स०] के एक सहाबी के बेटे का इंतेक़ाल हो गया था उसके ग़म में उन्होंने अपना सारा कारोबार छोड़ दिया और अपने घर के एक हिस्से में दिन रात इबादत करने लगे। हुज़ूरे अनवर[स०] को इसकी ख़बर लगी तो आप ने फ़रमाया, तर्जुमाः- ''अल्लाह ने हमें दुनिया को बिल्कुल छोड़ देने का हुक्म नहीं दिया है। बल्कि मेरी उम्मत के लिए रहबानियत यानी दुनिया को छोड़ देना अल्लाह के रास्ते में ज़बरदस्त कोशिश व मेहनत का नाम है।'' मतलब ये हुआ कि इस्लाम के नज़दीक इंसान को उसका सही मक़ाम और दर्जा उसी वक़्त मिल सकता है जब वह अपने आपको उसके लायक़ बना सके।